गलतबयानी के लिए छः वैज्ञानिकों को सज़ा

इटली की एक अदालत ने छः वैज्ञानिकों और एक प्रशासक को 6-6 साल की सज़ा सुनाई है। उनका ज़ुर्म यह है कि उन्होंने 2009 में इटली के शहर लाअकीला के निवासियों को भूकंप के बारे में गलत जानकारी देकर गुमराह किया जिसके कारण कम से कम 29 लोगों की जानें गईं और हज़ारों घायल हुए। दुनिया भर में वैज्ञानिक जगत इस फैसले से स्तब्ध है।

मामला इस तरह है। इटली का यह शहर भूकंप प्रभावित क्षेत्र में स्थित है। मार्च 2009 में कई दिनों तक यहां हल्के झटके महसूस किए जा रहे थे। एक व्यक्ति ने रेडॉन मापन के आधार पर भविष्यवाणी कर दी थी कि लाअकीला में जल्दी ही भयानक भूकंप आने वाला है। ऐसी स्थिति में लाअकीला के नागरिक सुरक्षा विभाग और स्थानीय प्रशासन ने 31 मार्च के दिन कुछ वैज्ञानिकों की एक बैठक बुलाई और उनके विचार जानने चाहे।

बैठक के फौरन बाद प्रशासनिक अधिकारियों ने एक प्रेस वार्ता में घोषणा की कि वैज्ञानिकों ने उन्हें बताया है कि भूकंप आने की कोई संभावना नहीं है क्योंकि छोटे-छोटे झटकों में ऊर्जा बिखरती जा रही है। प्रशासनिक अधिकारियों के मुताबिक वैज्ञानिकों की राय थी कि स्थितियां बहुत अनुकूल हैं और घबराने की कोई बात नहीं है। लिहाज़ा लोगों को घर छोड़कर कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं है।

इस 'वैज्ञानिक' सलाह के बाद लोग कहीं नहीं गए और 6 अप्रैल के दिन 6.3 तीव्रता का भूकंप आया और जान-माल की काफी हानि हुई।

वैज्ञानिकों पर आरोप यह नहीं है कि वे भूकंप की भविष्यवाणी क्यों नहीं कर पाते। लोग जानते हैं कि भूंकप की भविष्यवाणी करना संभव नहीं है। आरोप यह है कि वैज्ञानिकों ने यह क्यों कहा कि भूकंप नहीं आने वाला है। उनकी इस घोषणा के चलते लोग आश्वस्त होकर अपने घरों में ही बने रहे और नुकसान झेला।

यानी यह मामला विज्ञान को कटघरे में खड़े करने का नहीं है बल्कि इस बात का है कि जब वैज्ञानिकों के हवाले से अधिकारी गलत बयान दे रहे थे तो वैज्ञानिक चुप क्यों रहे। बताते हैं कि 31 मार्च की बैठक में वैज्ञानिकों ने दरअसल यह कहा था कि छोटे-छोटे झटके एक बड़े भूकंप को नहीं टालते हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि उनके पास यह कहने का भी कोई कारण नहीं है कि बड़ा भूकंप आने ही वाला है। अर्थात बैठक में वैज्ञानिकों ने किसी भी तरह की भविष्यवाणी करने में असमर्थता प्रकट की थी। उन्होंने यह भी कहा था कि ऐहतियात बरतना ही बेहतर है। गौरतलब है कि जिस एक व्यक्ति ने रैडॉन मापन के आधार पर भूकंप की भविष्यवाणी की थी, यदि लोग उसकी बताई जगह पर जाते तो और ज़्यादा नुकसान होता क्योंकि सबसे भीषण भूकंप उसी जगह आया।

यानी हुआ यह है कि वैज्ञानिकों की सलाह को तोड़-मरोड़कर ही नहीं बल्कि एकदम विपरीत अर्थ देकर प्रस्तुत किया गया। और वैज्ञानिकों ने समय रहते अपनी सही बात लोगों के सामने नहीं रखी। हो सकता है कि 6 साल की कैद इस लापरवाही के लिए थोड़ी कठोर सज़ा हो मगर एक बात पर गौर करना ज़रूरी है। यहां लोगों की जान दांव पर लगी थी। वैज्ञानिकों के प्रति लोगों के मन में एक सम्मान है। लिहाज़ा यह वैज्ञानिकों का फर्ज़ है कि अपनी बात को सही ढंग से लोगों के सामने रखें।

यह फैसला शायद वैज्ञानिकों के लिए एक चेतावनी की तरह है। ***(स्रोत फीचर्स)***